राज
निशाचर

सत्य और असत्य की, पाप और पुण्य की, अच्छाई और बुराई की, धर्म और अधर्म की, न्याय और अन्याय की लड़ाई हमेशा से चलती आई है, और शायद हमेशा चलती रहेगी-
परन्तु इस लड़ाई में पलड़ा किसका भारी रहेगा, इसका निर्णय करता है मनुष्य का विश्वास, जब मनुष्य का यकीन भगवान पर से, सत्य पर से, और अच्छाई पर से उठने लगता है तो बुरी शक्तियों के प्रभाव का दायरा बढ़ने लगता है। संसार में जितनी घृणा, पाप और हिंसा बढ़ती है उतना ही कमजोर होते जाते हैं देवता, और उतने ही शक्तिशाली होते जाते हैं, तम के अंधेरे में विचरण करने वाले असुर योनी...
निशाचर
कथा: जॉली सिन्हा
चित्र: अनुपम सिन्हा
इंकिंग: मनु, विनोद, दिलीप चौबे
सुलेख व रंग: सुनील पाण्डेय
सम्पादक: मनीष गुप्ता
लड़ो! और लड़ो! तुम दोनों जितनी क्रूरता से लड़ोगे, अपने दिलों में जितनी नफरत पैदा करोगे...
...उतना ही शक्तिशाली होता जाऊंगा, निशाचर, और फिर घृणा और क्रूरता से भरी इस दुनिया पर राज करेगा। लड़ो!

मुम्बई– मायानगरी मुम्बई। जहाँ किस्मत फिसड्डी चलने वालों को सोने से लाद देती है। यहाँ पर राज करते हैं, किस्मत, मेहनत–
और माफिया–
तूने इस इलाके के दुकान वालों को हफ्ता देने के खिलाफ भड़काया है डेविड! इसलिए यह हफ्ता...
...तेरी जिन्दगी का आखिरी हफ्ता है...
आऽऽह ऽऽ!
EXPRESSIONS
इन इलाकों में दहशत का रौब आज तक को दबा देता है। जुबानें लकड़ी की हो जाती हैं। और दिल पत्थर के–
आँखों के आँसू आँख से बाहर आने से घबराते हैं। और इन्सान को एहसास होता है कि उसकी हैसियत, नाली में रेंगने वाले कीड़े से ज्यादा और कुछ नहीं है–
देखो! देखो अपने नेता को! तुम्हारी आवाज बना फिरता था ये! आज इसके अपने गले में आवाज बाकी नहीं बची है! कुत्ते की मौत मारा गया ये!...
...लेकिन अभी इसको सजा भुगतना बाकी है! यह मर तो गया है... पर इसका जनाजा नहीं उठेगा! नहीं उठेगा इसका जनाजा! और जो इसका जनाजा उठाएगा... वो पहले अपना जनाजा उठवाने की तैयारी कर ले!
यहां इन्सान को मरने का भी हक नहीं है–

शायद इसीलिए कोई मरना नहीं चाहता-
लेकिन मौत खुद ही मौत का डर कम कर देती है। डेविड के सभी संबंधियों और मित्रों का डर फिलहाल खत्म हो गया था-
क्योंकि ... वे डेविड को छोड़ कर आने वाले नहीं थे-
मालुरा के पुराने कब्रिस्तान में-
दफनाने की रस्में जल्दी पूरी कीजिएगा फादर! इस कब्रिस्तान और छोटे हाजी का कोई भरोसा नहीं है।
यू आर राइट, नब...
मैं बहुत जल्दी - जल्दी ही करूंगा! क्योंकि मुझे कई मुर्दों को दफनाना है।
कई मुर्दों को? ओह, शायद आपको दूसरे कब्रिस्तानों में भी जाना है।
नहीं! सारे मुर्दे यहीं दफनाए जाएंगे! ...मैं फादर नहीं, छोटे हाजी का आदमी हूं। इसे मालूम था कि तुम लोग हमारी चेतावनी को अनसुनी करोगे!

इसीलिए हम तुमको ऐसी फिल्म बनाएंगे, जिसे देखकर लोग 'हफ्ता' तो क्या 'डेली' पैसे देने शुरू कर देंगे।
कूद! इस कब्र में कूद! अगर जगह बची तो डेविड को भी डाल देंगे!
जगह नहीं बचेगी 'फादर'...
...क्योंकि इसमें पहले तू कूदेगा, और फिर तेरा पिल्ला! उसके बाद इसमें जगह नहीं बचेगी...
मैं वह हूं, जिसे देखकर तुम जैसे लोग तुरन्त पहचान जाते हैं...
...क्योंकि तुम लोग कुत्ते हो, और मेरी शक्ल कुत्ते जैसी है!
आह! तू... तू तो ताबूत उठाने वाले लोगों में से ही एक है! लेकिन तेरे पास बन्दूक?... कौन है तू?
डोगा!

हाँ, डोगा! मैं इन्सानों को फाड़ खाने वाले भेड़ियों से बहुत नफरत करता हूँ। लेकिन उससे भी ज्यादा नफरत तुम जैसे जोंकों से करता हूँ। जो इन्सान का खून आहिस्ता-आहिस्ता चूसते हैं। धीरे-धीरे मारते हैं इन्सान को...
तड़ाक
...छोटे हाजी के पीछे तो मैं बहुत दिनों से था। पर ये पता नहीं चल रहा था कि वह आखिर रहता कहाँ है? अब ये बात तुम लोग मुझे बताओगे?
धाड़
जरूर बताएंगे! अगर तू ज़िन्दा बचा तो जरूर बताएंगे!

पता तो लगाऊंगा ही! चाहे इसके लिए मुझे तुम लोगों की उंगलियां तोड़नी पड़ें या नाखून उखाड़ने पड़ें।
तड़ तड़ तड़ तड़ तड़ तड़ तड़
ट्रिगर पर दबी उंगली, पलभर के लिए ढीली हुई, गोलियां रुकीं–
और इसी पल डोगा की गन गरज उठी –
सिर्फ एक बार गरजी–
निशाना गजब का था–
डोगा की गोली उस गुंडे की बन्दूक की नाल में घुसती चली गई–
टिच्यूं
मैगजीन एक धमाके के साथ फट पड़ी–
और साथ ही साथ बन्दूक के जोड़ खुलते चले गए–

बता, पहले तेरी उंगलियां तोड़ूं या तेरा दाहिना हाथ कंधे से उखाड़ दूं?
क...कसम से डोगा! मुझको नहीं पता कि छोटा हाजी कहां मिलेगा। सच!
सच! आऽऽह!
कड़ाक
उभरते ही, उस गुंडे के बाजू और कंधे के बीच के जोड़ टूट गए–
आह
आ!!! ह ह ह ह
उआ ऊ

बस, डोगा! ... पाप है! और इस पाप की सजा तो तुझे मिलनी ही चाहिए!
हिंसा और क्रूरता, रात के अंधेरे में अपनी लहरें फैलाते आ रहे थे–
और ये तरंगें किसी को जीवन प्रदान कर रही थीं–
अगर ये लड़ाई यहीं रुक जाती! अगर डोगा दोनों गुंडों को अपने काबू में कर लेता! अगर ... बजाय रुककर डोगा की मदद करते। अगर इनमें से एक भी संभावना पूरी हो जाती–
तो यह दुनिया जो अभी स्वर्ग जैसी नहीं है, तो कम से कम नरक जैसी न बन जाती–

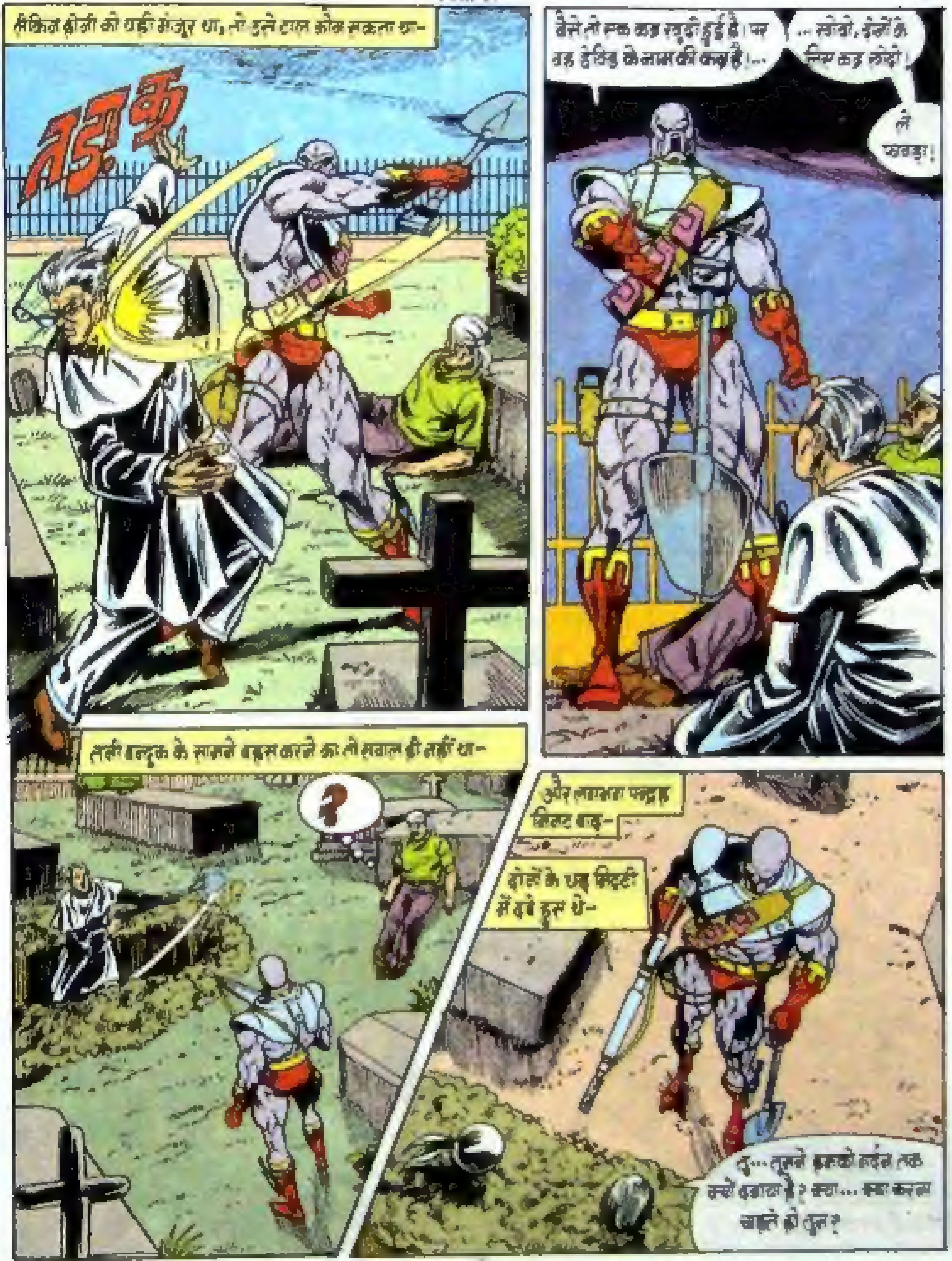
लेकिन डोगा को यही मंजूर था, तो इसे टाल कौन सकता था-
तड़ाक!
वैसे तो एक कब्र खुदी हुई है। पर वह हेलिंग के नाम की कब्र है।...
...खोदो, दोनों के लिए कब्र खोदो।
खबरदार!
उसकी बन्दूक के सामने बहस करने का तो सवाल ही नहीं था-
और लगभग पन्द्रह मिनट बाद-
दोनों के शव मिट्टी में दबे हुए थे-
तु... तुमने हमको कहाँ तक क्यों बचाया है? क्या... क्या करना चाहते हो तुम?

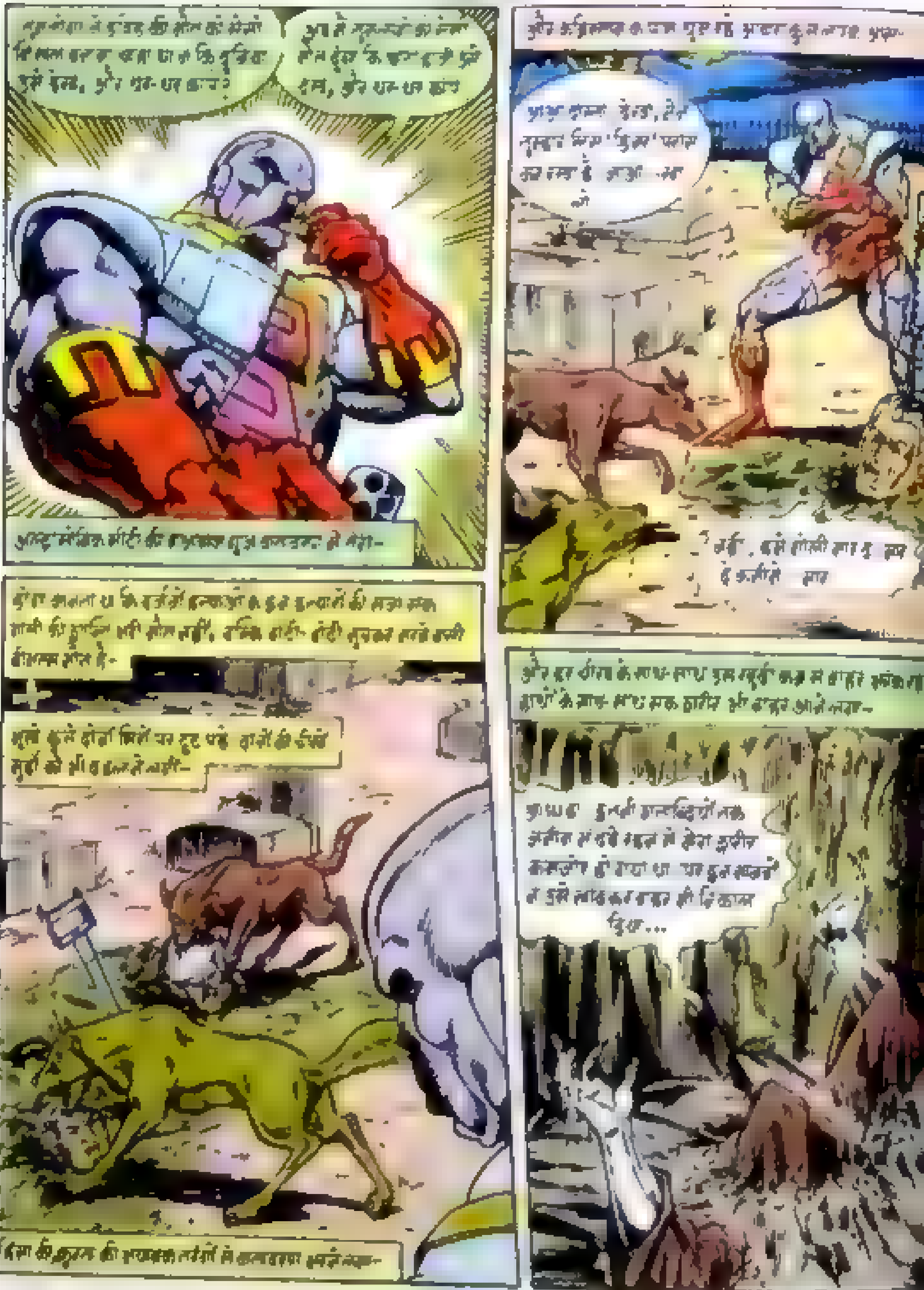

कौन हो तुम?

दे दे अपनी आत्मा मुझको

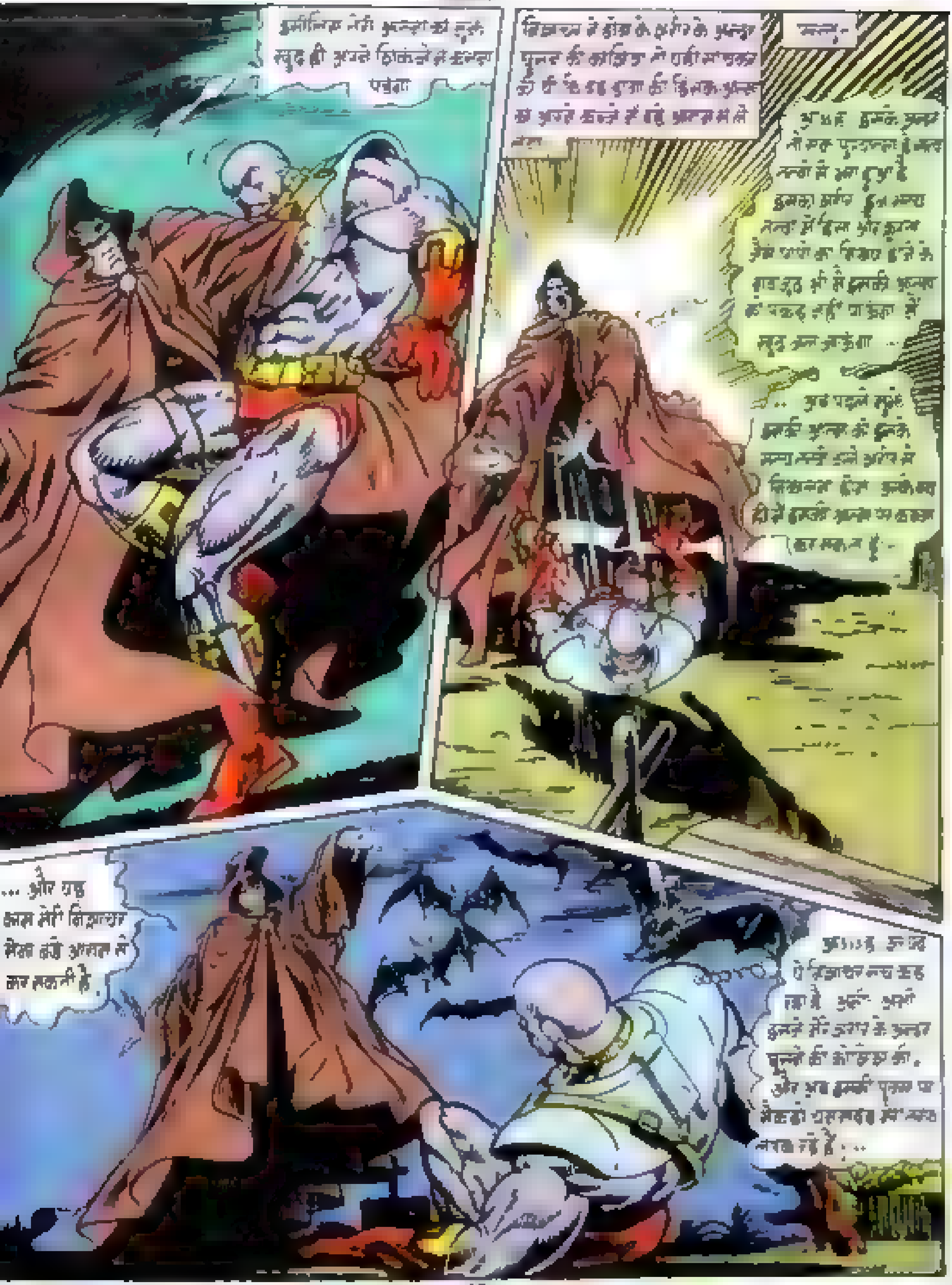

...कि मैं तेरी आत्मा को इसके आप ही बाहर खींच लूं.
अगर यह सचमुच दुष्ट शक्तियों वाला प्राणी है तो ईश्वरीय शक्तियां इस पर जरूर असर करेंगी!
और इसका स्पर्श मैं अपने शरीर से होने नहीं दूंगा।
ओह. क्रॉस से वार कर रहा है? यह असर तो कर सकता है, पर सिर्फ तभी, जब इसका स्पर्श मेरे शरीर से हो.

पाप की सजा!
अरे, यह... यह तो गायब हो गया!

कौन?

अभी वह मनुष्य, वहाँ तक पहुँच पाता तो-
आह!!
दुष्ट आदमी पैसे की कमी के कारण नहीं, बल्कि अपने लालच के कारण अपराध करते हैं! और रही जान की बात तो उसे लेने की कोशिश करके देख ले!

मैं जानता हूं कि तू गोलियों की बौछार से भी बच लेता है, फिर ये पत्थर क्या चीज़ हैं नहीं, मैं तुझ पर पत्थरों से वार नहीं करूंगा! मैं तुझ पर अदृश्य हथियार का वार करूंगा। वायु के तेज दबाव वाले जेट का!
अगर ध्रुव उस वायु को देख पाता, तो शायद बचने की कोशिश भी करता—
लेकिन हवा को कौन देख पाया है—
आऽऽह! हवा का धक्का तो काफी तेज है, मैं इसके वार को देख तो नहीं सकता, पर वार की दिशा का अन्दाजा तो लगा ही सकता हूं!
लगातार निकल रहे वायु-जेट से ध्रुव तो बचने लगा—
ध्रुव के चकराते सिर के कारण उसकी गति कुछ पलों के लिए घटी—
लेकिन वायु-जेट दूसरी चीज़ों को हवा में इधर-उधर उछालने लगा—
और इस बार वायु-जेट का वार वह नहीं बचा पाया -

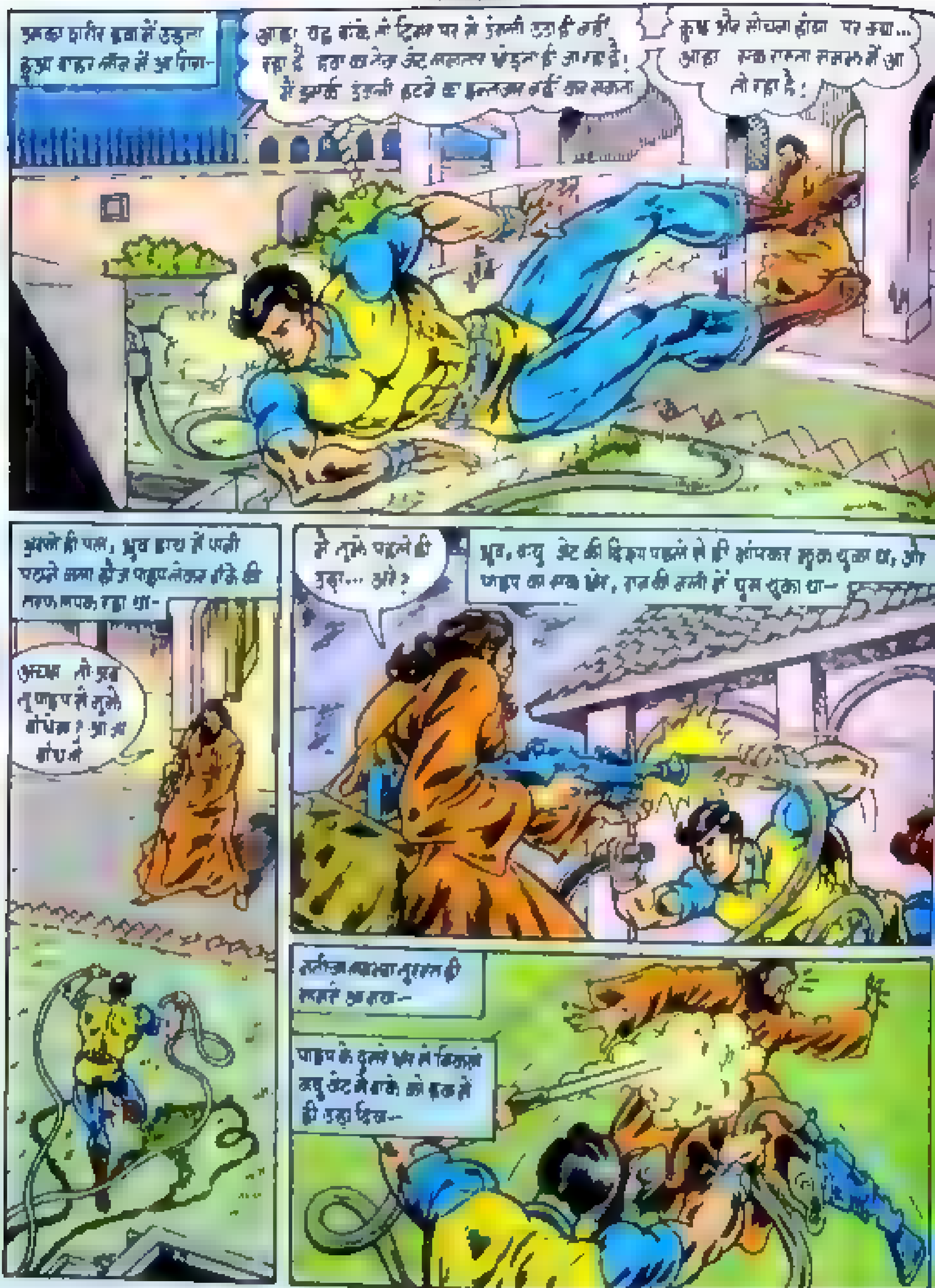
कुछ और सोचना होगा पर क्या... आहा एक रास्ता समझ में आ तो रहा है!

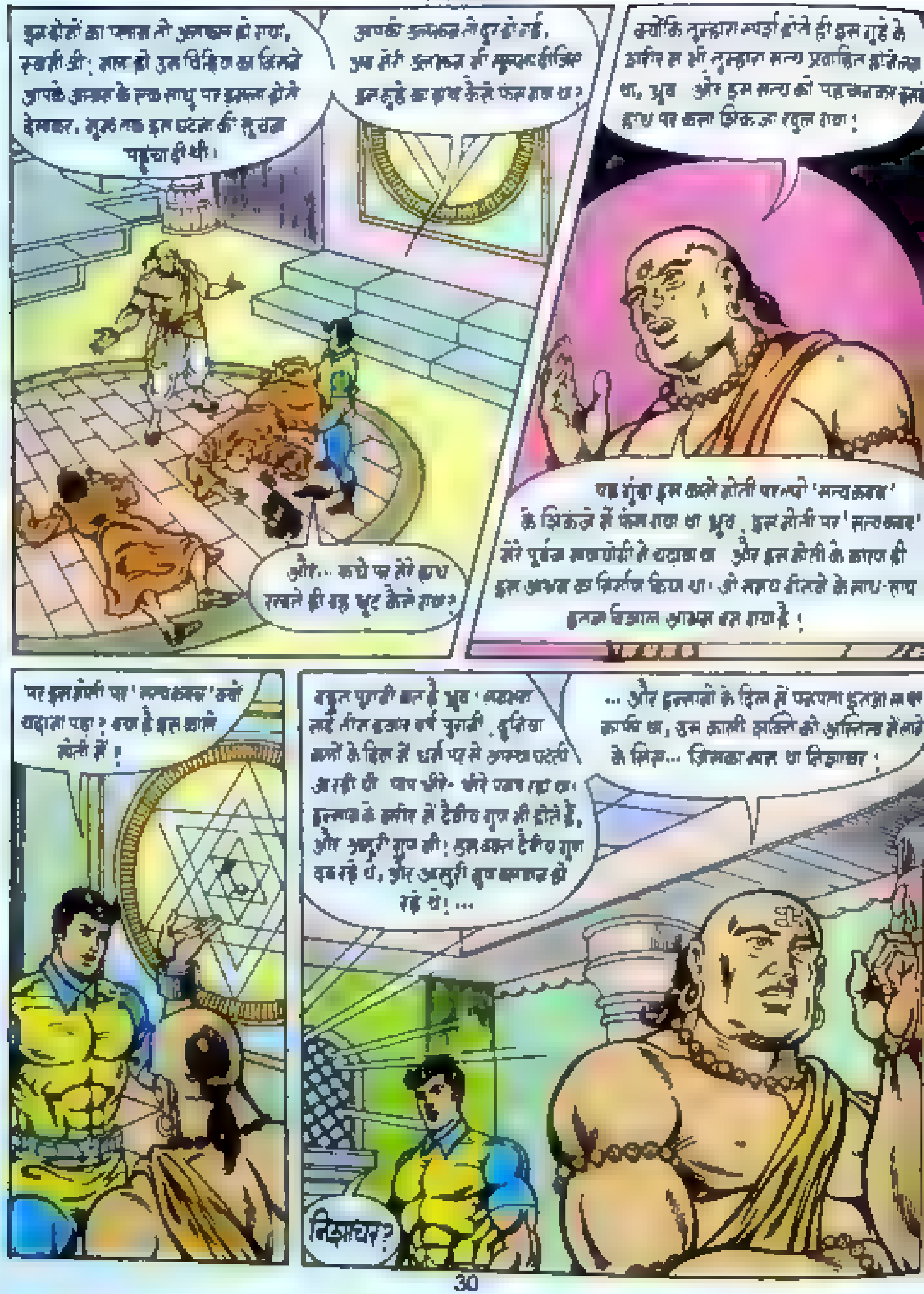
इन दोनों का प्रभाव तो समाप्त हो गया, स्वामी जी; लेकिन उस विशिष्ट का क्या जिसने आपके आश्रम के एक साधु पर हमला होते देखकर, मुझ तक इस घटना की सूचना पहुंचा दी थी।
आपकी उलझन तो दूर हो गई, अब मेरी उलझन भी सुलझा दीजिए इन दुष्टों का प्रभाव कैसे फैल गया था?
और... कंधे पर मेरे हाथ रखते ही वह छूट कैसे गया?
क्योंकि तुम्हारा स्पर्श होते ही इस गुफा के अंदर भी तुम्हारा सत्य प्रवाहित होने लगा था, ध्रुव! और इस सत्य को पहचानकर इसके हाथ पर कसा शिकंजा खुल गया!
यह गुफा इन काले योगी पर लगे 'सत्य कवच' के शिकंजे में फंस गया था ध्रुव, इन योगी पर 'सत्य कवच' मेरे पूर्वज महायोगी ने चढ़ाया था। और इस योगी के कारण ही इस आश्रम का निर्माण किया था। और समय बीतने के साथ-साथ इसका विशाल आश्रम बन गया है!
पर इन योगी पर 'सत्य कवच' क्यों चढ़ाना पड़ा? कौन है इस काले योगी में?
बहुत पुरानी बात है ध्रुव! लगभग तीन हजार वर्ष पुरानी। दुनिया वालों के दिल में धर्म पर से आस्था घटती जा रही थी। धीरे-धीरे... इंसान के शरीर में दैवीय गुण भी होते हैं, और आसुरी गुण भी! उस वक्त दैवीय गुण दब रहे थे, और आसुरी गुण उभर रहे थे!...
...और इंसानों के दिल में पनपता इतना ही काफी था, उस काली शक्ति को अस्तित्व में लाने के लिए... जिसका नाम था निशाचर!
निशाचर?

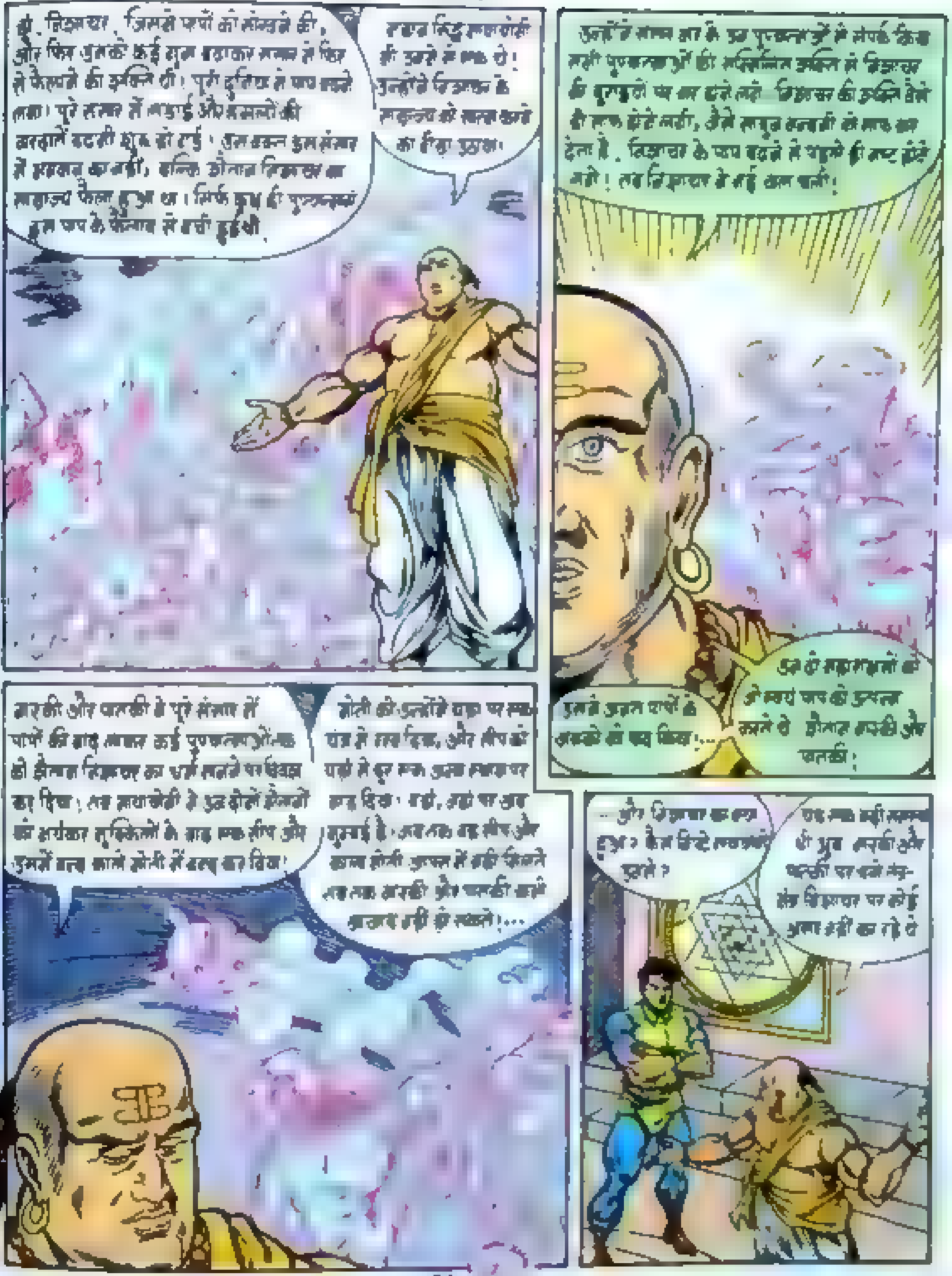

हे भगवान, यह क्या है?

कैसे हो सकता है?
फटक सकता है
नहीं है,
आ...ह ध्रुव,

लेकिन ध्रुव को यह अन्दाज़ा नहीं था कि वह किससे टकरा गया है–
ध्रुव का दिमाग अंधेरे में डूबने लगा–
जिसे बचाता हुआ वह अंदर आया था–
लेकिन ध्रुव भी अब होश संभाल चुका था

और उस छेद से पार होते होते, नरचर के साथ, एक सवारी भी शामिल हो गई थी-
और
इससे पहले कि नरचर स्थिति को समझ पाता-
ध्रुव ने स्टार लाइन को ... और वह नीचे झूल गया-
अब मुझे सबसे पहले किसी कमरे में घुसना होगा, छोटे कमरे में जहां से निकलकर मैं मोती को सुरक्षित स्थान पर रख दूं और छोटा कमरा होगा तो राक्षस अन्दर घुसकर भी अपने परों का इस्तेमाल नहीं कर पायेगा।
आआह

और इस बार, जब नभचर संभलकर ध्रुव की तरफ लपका, ध्रुव उसके सिर से पार हो चुका था–
इस बार नभचर आगे नहीं सकता था, क्योंकि ध्रुव भी इस बार उसके साथ ही उड़ रहा था–
अब नभचर मुसीबत में था–
और सिंहासन तक इस मुसीबत के संकेत पहुंच रहे थे
ओह! कौन है ये इन्सान, जो नभचर का भी मुकाबला कर रहा है. भयंकर सत्य शक्ति महसूस हो रही है मुझे इस इन्सान में! हर वार के स्पर्श के साथ नभचर में भरी पाप शक्ति धीरे-धीरे नष्ट हो रही है। जैसे ही नभचर थोड़ी ही देर में मेरी पाप शक्ति से रहित होकर फिर से एक मामूली चमगादड़ बन जाएगा
मुझे कुछ करना होगा... अपनी चाल को बदलना होगा। मुझे इस सत्यनिष्ठ इन्सान का अदम्य-मुश्किल करना होगा

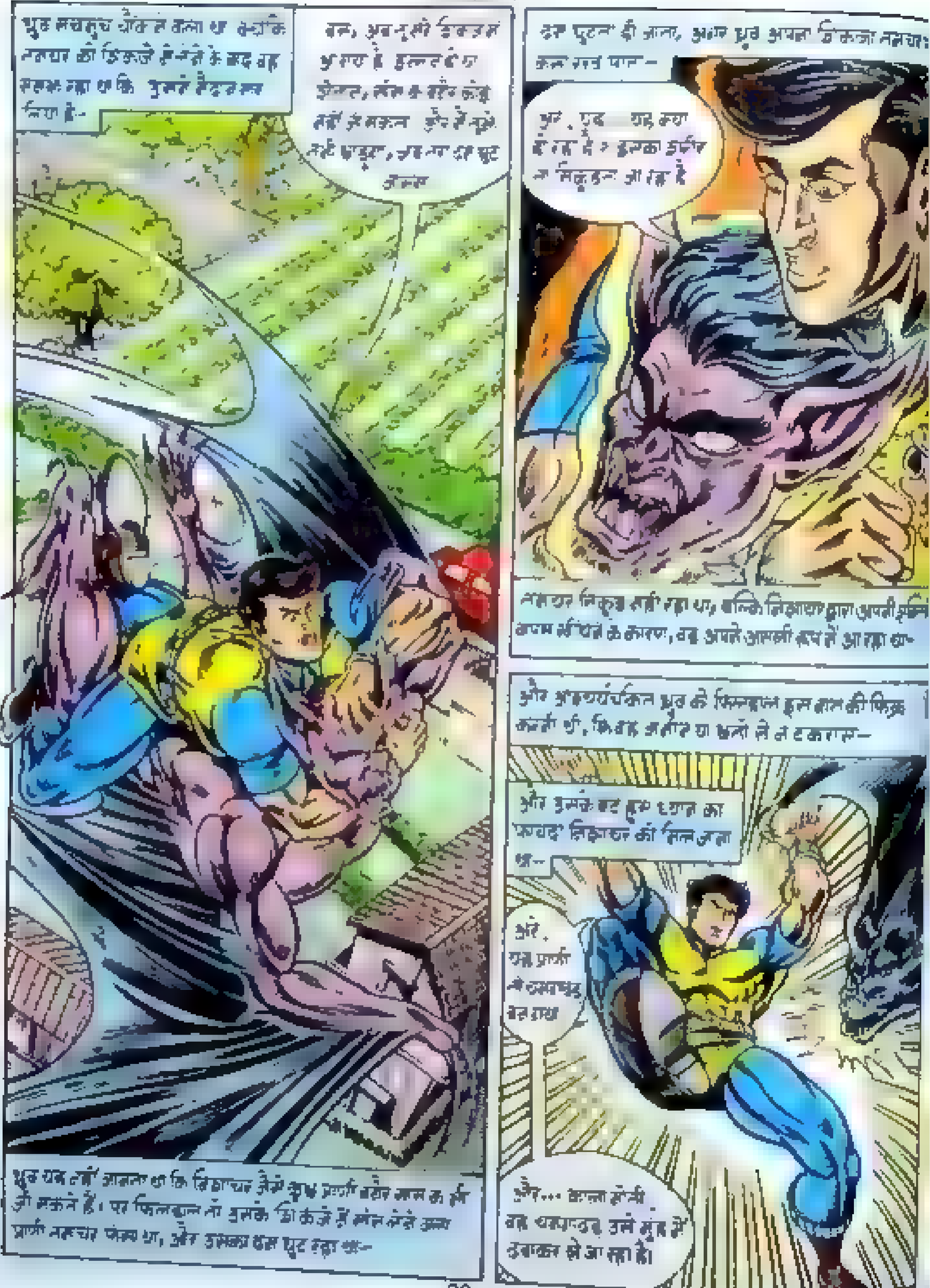
वह अपने असली रूप में आ रहा था—
और इसके बाद हुए धमाके का
और... काला
ध्रुव यह नहीं जानता था कि

गिरते-गिरते हुए भी ध्रुव ने चमगादड़ को रोकने की जी-तोड़ कोशिश की-

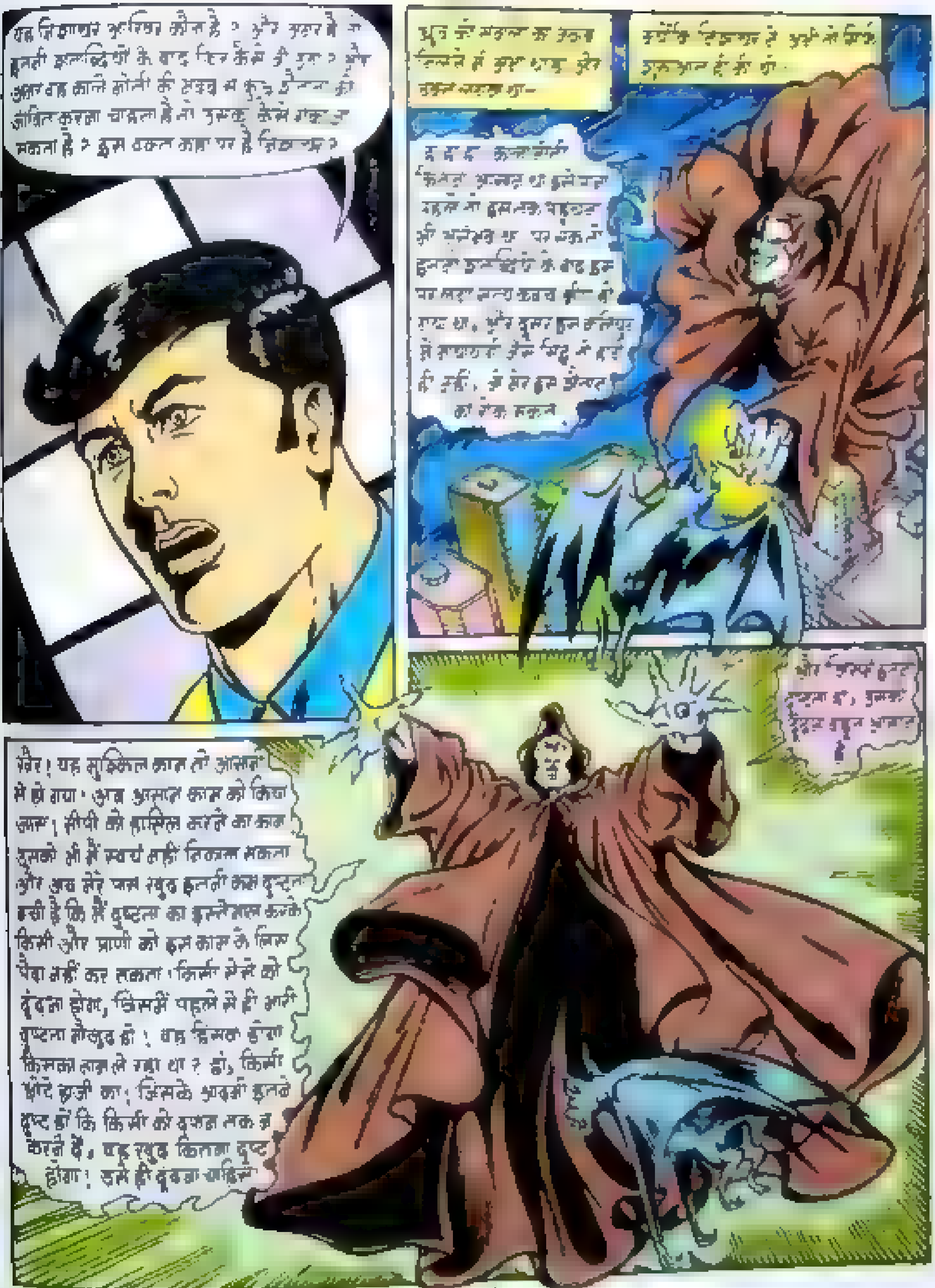
खैर! यह मुश्किल काम तो आसानी से हो गया। अब आसान काम को किया जाए। मीघी को हासिल करने का काम इसको भी मैं स्वयं नहीं निकाल सकता और अब मेरे पास खुद इतनी क्या दुष्टता बची है कि मैं दुष्टता का इस्तेमाल करके किसी और प्राणी को इस काम के लिए पैदा नहीं कर सकता। किसी ऐसे को ढूंढना होगा, जिसमें पहले से ही भारी दुष्टता मौजूद हो! वह जिसका ढांचा किसका लाश ले गया था? हां, किसी भी ... का; जिसके ... दुष्ट हों कि किसी को ... करते हैं, वह खुद कितना दुष्ट होगा! उसे ही ढूंढना चाहिए

पुलिस ने हमको चारों तरफ से घेर लिया है। भागने की कोशिश बेकार है। अब हमारे पास तुम्हारे खिलाफ़ केस भी है और सबूत भी। हाथ ऊपर उठाकर बाहर आ जाओ।

अब हम क्या करें, बॉस, हम चारों तरफ से घिर चुके हैं. हम भाग नहीं सकते.
लेकिन पुलिस भी पूरी तैयारी के साथ आई थी—
रॉकेट लॉन्चर निशाने पर तन गया
और कमरे की दीवार में एक बड़ा छेद हो गया—
अब हम क्या करें बॉस?

कौन?
तुम सबको यहां से निकाल
मुझे देनी होगी
देखो! पापों के

शिकारा की पुतलियों से निकलती अग्नि की लहरें पुलिस जीप की तरफ लपकीं—
और वाहनों तथा इन्सानों को नष्ट होने में सिर्फ कुछ ही पल का समय लगा—
कमाल है, आप तो सचमुच

अब यहां से फटाफट निकलो
चलो!

... जिस से ये आवाजें कैसी आ रही हैं?

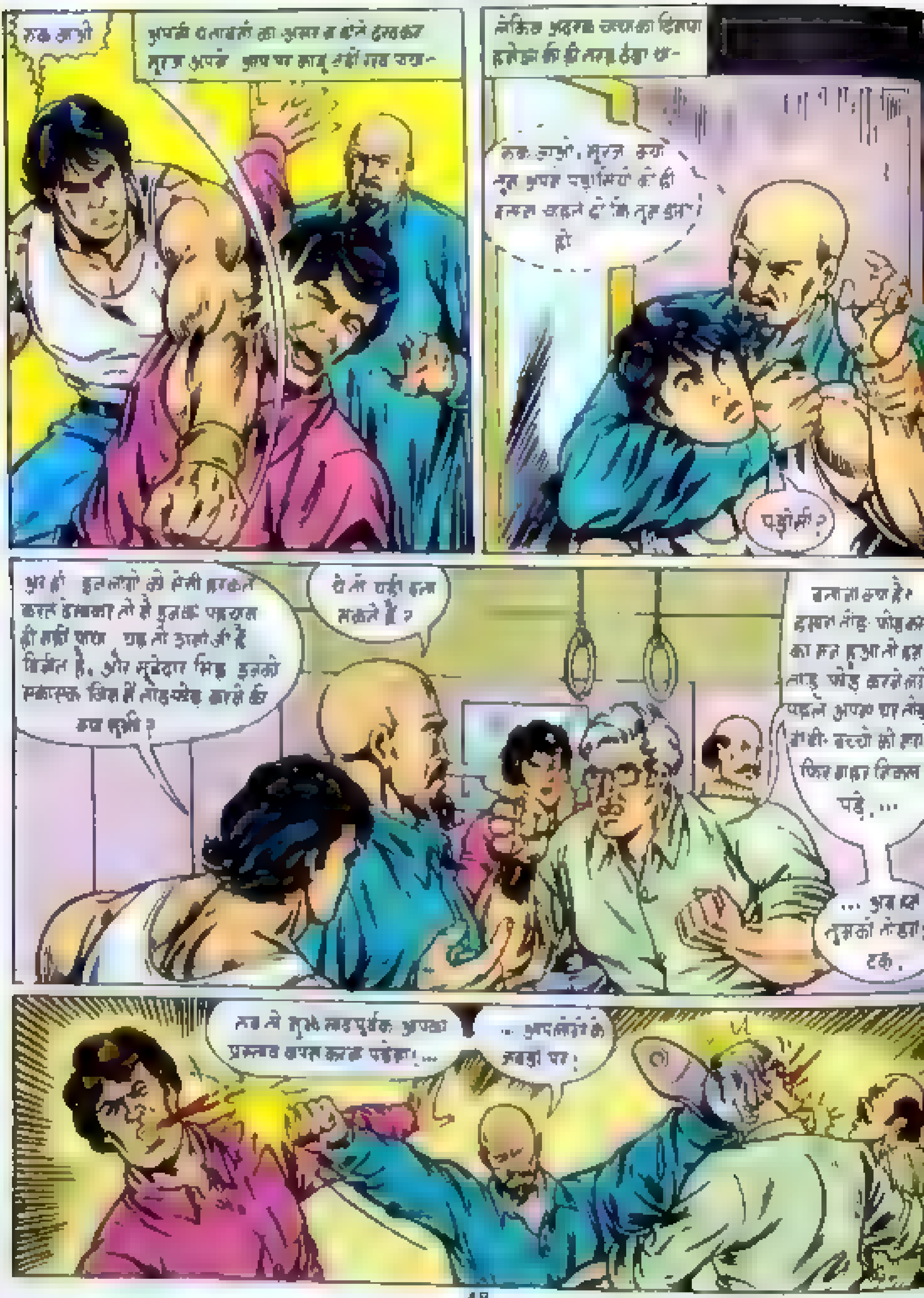

मुंबई से फैली इस उपद्रव की सूचना, देश के कोने-कोने में पहुंच रही थी–

तुम्हारी तैयारी तो पूरी है
न ?
वे आ चुके हैं.

और डोगा ने एक बार फिर अपना बल्ला झटकते सिर के रास्ते में रख दिया-

खैर, देखना है कि यह दूसरा जोकर क्या कर पाता है?
पर दूसरे वार से बचना मुश्किल था-
क्योंकि इस बार जिन बहुत धीरे-धीरे डोगा की तरफ बढ़ी थी, और झुककर या हटकर उससे बच पाना संभव नहीं था-
...हां! एक काम किया जा सकता है
अगले ही पल डोगा के हाथ में उसका चाकू चमक उठा-
पर डोगा का इरादा कुछ और ही था, चाकू बिजली के तारों को काटता हुआ, अन्दर जा घुसा-

और मदद उसके सामने खड़ी थी–
उसे मदद चाहिए थी–
...लेकिन यह कुत्ते जैसे हुलिए वाला कौन है?
डोगा भी सोच में पड़ गया था–
आसमान को चीरता यह मेरी मदद को कौन आ गया? इसकी शक्ल भी देखी-देखी लग रही है, पर कहां? शायद अखबार में?
तभी डोगा की सोच को एक झटका लगा–
बचो डोगा! ये हड्डी तुमको जलाकर राख कर देंगे। मैं नहीं जानता था कि निशाचर ने इसके शरीर में यह शक्ति भी भर दी है
निशाचर यही यह भी निशाचर द्वारा बनाया गया कोई प्राणी है....

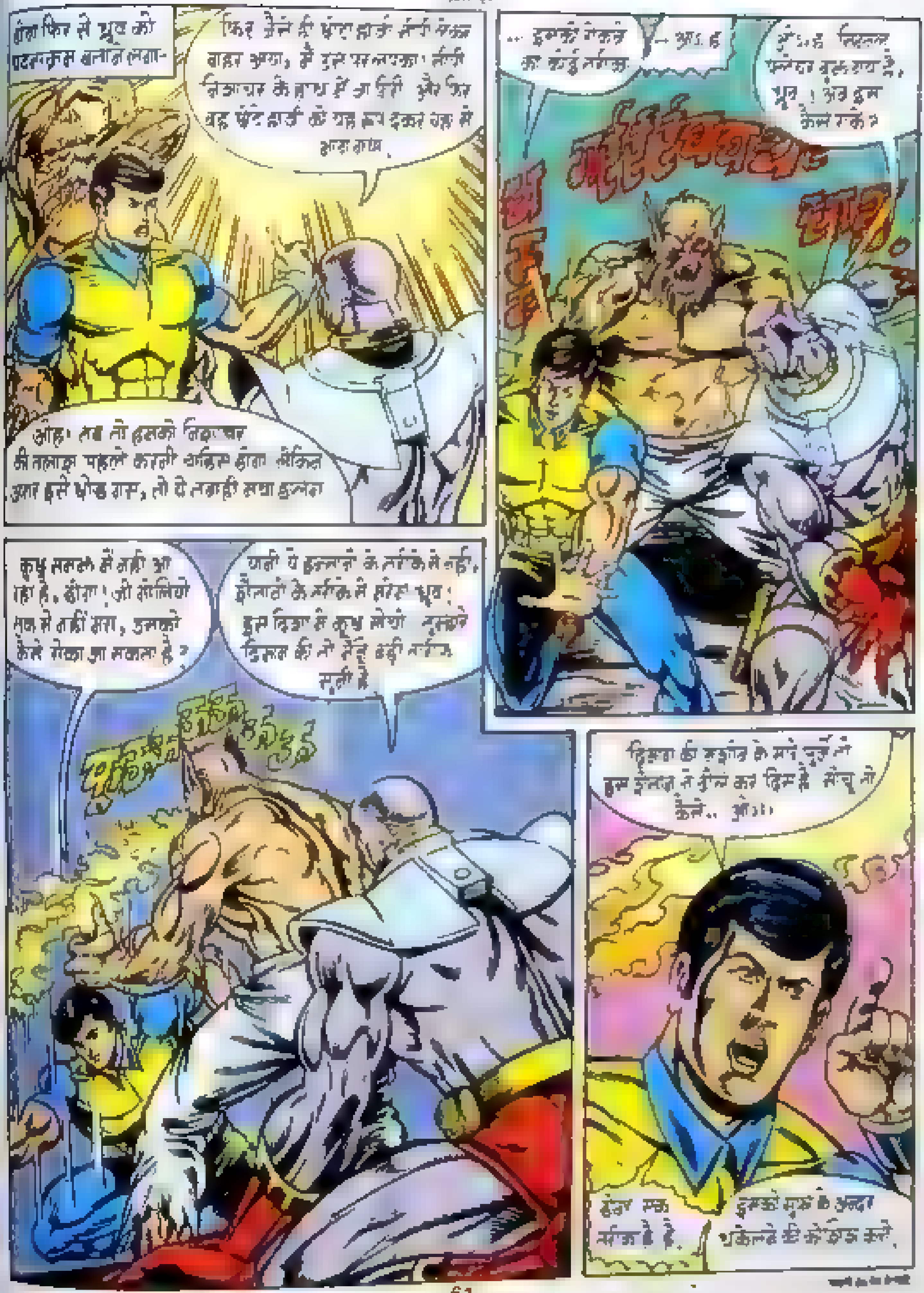
कुछ समझ में नहीं आ रहा है, डोगा ! जो गोलियों से भी नहीं मरा, उसको कैसे रोका जा सकता है ?

लेकिन उसके पास कोई और रास्ता नहीं था—

तुम बार-बार 'सत्य-कवच' का नाम ले रहे हो, यह सत्य-कवच क्या चीज़ है? और तुमको इसके बारे में कैसे पता है? तुम तो अभी-अभी यहां आए हो
कौन?
सोनी! तुम यहां पर कैसे आ गईं? मुझे ढूंढ रही थी क्या?
मैं तुमको इसके पास ले चलती हूं ध्रुव!
नहीं ध्रुव, मैंने तो सोचा भी नहीं था कि तुम मुंबई में होगे.

मुझे राजस्थान में बैठे बैठे भीषण मुंबई की तरंगों का आभास हो गया था और ये तरंगें मुंबई से आ रही थीं. मैं जल्द ही यहाँ के लिए रवाना हो गई थी। यहाँ पर आकर मुझे पूरे मुंबई में तरंगें प्राप्त होने लगीं

चुप हो जाओ मूर्खो, चुप हो जाओ बिना कुछ जाने-बूझे मुझ पर प्रहार कर रहे हो? जो, जिस मायावी ने तुमको कैद किया था, उसी ने मुझको भी बन्धक बना लिया था.

पृथ्वी से यह दीवारें कभी खत्म नहीं होंगी। खत्म होंगे तो सिर्फ तुम दोनों नारकी और पातकी। यही नाम है न तुम्हारे?
नारकी, निशाचर!
नारकी, तुरन्त ही पातकी का इशारा समझ गया—

लूट लो
मार डालो

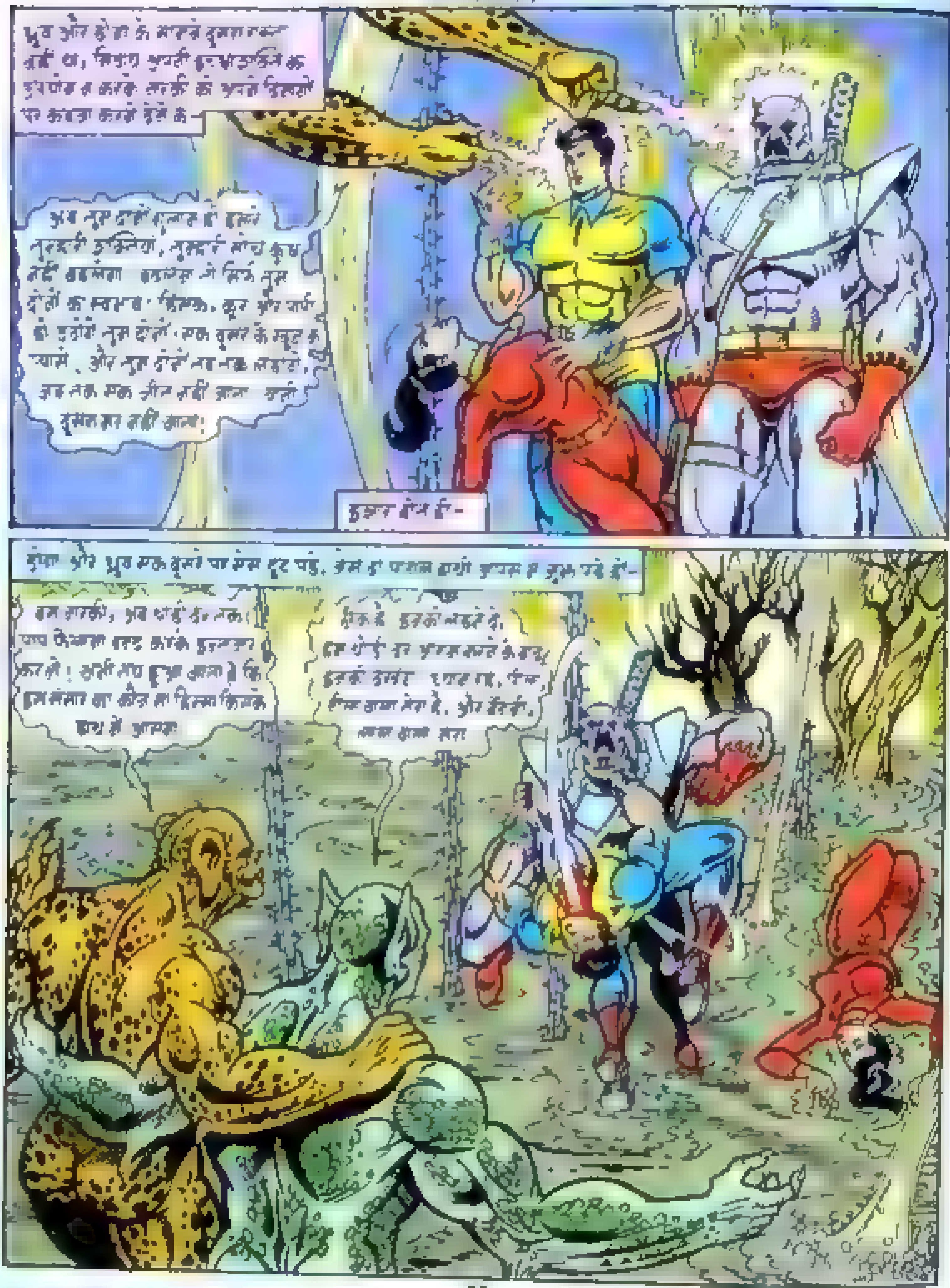

व और डोगा के अन्दर, शैतानों की शक्ति ने इस
शविकता को जगा दिया था, जिसे इन दोनों की
शक्ति ने अब तक सुलाकर रखा हुआ था—
दोनों ही एक दूसरे पर प्राणघातक हमले कर रहे थे। परन्तु ध्रुव का धर्म भी इन्सान की तरह लड़ने का था, अभी भी ध्रुव के वारों को घातक बनने से रोके हुए था—
लेकिन डोगा ने न पहले कभी इस बात की परवाह की थी, और न ही उसे आज कोई परवाह थी—

और कुछ ही पलों बाद डोगा की कुत्ता फौज ध्रुव की तरफ लपक रही थी—
लेकिन कुत्तों पर ध्रुव की पुचकार का कुछ खास असर नहीं हुआ—
ओह, तो ये मुंबई के कुत्ते, राजनगर की भाषा नहीं समझते, और, कुत्ते नहीं समझते तो कोई और समझेगा।
ध्रुव के मुंह से एक और पुकार निकली—
और अगले ही पल मुंबई के आकाश पर मंडराने वाले सैकड़ों प्रकार के पक्षी कुत्तों पर टूट पड़े—

आऽऽऽह!
लेकिन डोगा आगे बढ़ता ही चला आया—
तू मेरा सारा खून भी बहा देगा, तब भी डोगा के कदम नहीं रुकेंगे...

नहीं, लड़की नहीं

कैसा खतरा, ध्रुव ?
ध्रुव, नोरी का
बाजू के उस छोर से-

उस टुकड़े को मुंबई के उस 'मिली टर्क' तक पहुंचने में कुछ ही पलों का वक्त लगा–
क्योंकि इसी वक्त लोरी की दूसरी मायाविक किरण,
और कुछ ही पलों बाद वह पत्थर भी
क्योंकि अगले ही पल
चिपक गया–
साथ ही साथ, लोरी

दोनों ही स्पंज में पानी की तरह इन दोनों पत्थरों के बीच में खिंचते चले गए-
ओह, निशाचर होश में आ गया है।...

और ध्रुव ... क्योंकि ... का तरीका तो कम से कम हम मालूम था, पर जिग्नाचार को कैद करना तो दूर उसे रोकने तक का तरीका हमें नहीं पता !
... है ध्रुव ... है . ... न करना...
ये तो तुमने 'बिल्ली' के गले में घंटी बांधने जैसा तरीका सोचा है ध्रुव . जिग्नाचार को किसी सबूत में डालना, और फिर ... से छिटकी ही अच्छा कोई बच्चों का खेल है क्या ? पहले तो यह काम ही असंभव लगता है, और अगर किसी तरह से कर भी लिया, तो जिग्नाचार तुम दोनों जिंदगी का ... नहीं फेंकेगा क्या ? कोई और तरीका सोचो ध्रुव ! और कोई तरीका .

...और मैं तुम लोगों को ऐसा कुछ करने का एक प्रतिशत भी मौका नहीं दूंगा! क्योंकि अब मैं धरती पर चलूंगा ही नहीं। फिर तुम लोग मुझे धरती में दबोचोगे कैसे?
IRON 2.
ओह! अब हम क्या... ध्रुव! लोरी को निशाचर का वार लग गया है! वह बेहोश हो रही है!
रुको मत डोगा, भागते रहो! ऐसे वह हमारे पीछे आएगा, और लोरी पर दुबारा वार करने के लिए नहीं रुकेगा!...
...लेकिन इसने तो हमारे सारे पत्ते देख लिए! देख क्या लिए, छीन लिए। अब तो हमारे हाथ में एक पत्ता भी नहीं है!
सारे पत्ते निशाचर के ही हाथ में... नहीं! एक जोकर हमारे हाथ में है डोगा! और यह शायद 'ट्रंप कार्ड' भी साबित हो सकता है!
भागते ही पल, डोगा पलभर के लिए अपनी जगह पर थम गया, और ध्रुव दूसरी तरफ भागा—
बोलते जाओ ध्रुव, मैं सुन रहा हूं!
उधर सामने 'रिव केमिकल' की फैक्ट्री देख रहे हो न! निशाचर को उधर खींचकर ले आओ! और...
ध्रुव डोगा को योजना बताता चला गया।
जाहिर था कि निशाचर ध्रुव का पीछा करने के बजाय डोगा पर ही वार करता—

और निशाचर ने वैसा ही किया–
आह! इसके वार ने तो फैक्टरी की दीवार में ही छेद कर दिया... मेरा अन्दर घुसने का रास्ता आसान कर दिया!
इधर डोगा, योजना का अपना भाग बखूबी निभा रहा था–
और इधर, ध्रुव भी अपना खेल दिखाने की तैयारी शुरू कर रहा था–
मिल गया! मैं जानता था कि किसी भी मेट्रो में खुदी सड़क ढूंढना कोई मुश्किल काम नहीं है! खुदी सड़क तो मिल गई। बाकी काम ये बोरियां कर देंगी! और फिर मुझे रिमोट से बुलाना होगा अपने हेलीकॉप्टर को!
सीवर
कुछ ही मिनटों बाद ध्रुव, स्टार हेलीकॉप्टर पर सवार होकर महाकेमिकल फैक्ट्री की तरफ बढ़ रहा था–
अब मुझे बहुत जल्दी करनी होगी। क्योंकि निशाचर के सामने डोगा ज्यादा देर तक नहीं टिक पाएगा! हे भगवान, हमें सफल करना!
आम इन्सान सचमुच ज्यादा देर तक निशाचर के सामने नहीं टिक सकता था, लेकिन यह डोगा था, जो काम खत्म होने के बाद ही हटता था। या तो काम खत्म होता था, या डोगा की जान–
आ...हा! यही वह चीज है, जिसकी मुझे तलाश थी। केमिकल्स से भरे ड्रम! इंडस्ट्रियल इस्तेमाल के लिए!
पर इस वक्त इनका इस्तेमाल किसी और काम के लिए होगा!
RYCOL
SIVE

योजना के अनुसार पहले मुझे हेलीकॉप्टर की हल्की सी आवाज आने तक इन्तजार करना है। आ गई आवाज! अब मुझे इन ड्रमों को उठाकर निशाचर पर फेंकना है। परन्तु निशाचर तो काफी ऊपर उड़ रहा है, और इनको तो उठाना ही मुश्किल है, और इतनी दूर फेंकना तो... खैर! यही तेरे इम्तहान की घड़ी है! सारी ताकत!
सारी इच्छाशक्ति! आऽऽऽऽ ऊ ऊ ह!
ड्रम, दूर हवा में उछल गया—
निशाचर के सर के ऊपर तक—
ओऽऽऽ तू इनसे मुझे मारेगा, ले देख! इनका मैं वही हाल करूंगा...
...जो थोड़ी देर में तेरा आऽऽऽ! यह क्या? इसने तो... गलत... कोई चिपचिपा पदार्थ गिर रहा है।
में नहा गया—
और उसी पल ध्रुव ने रस्सी से लटकी और मिट्टी से भरी बोरियों को आजाद कर दिया—
पर मिट्टी की एक मोटी परत जम गई—
आऽऽह! इस मिट्टी को मैं दूर झटक नहीं पा रहा हूं! आऽऽऽह!
देखा निशाचर? तू धरती की मिट्टी में दबे, या मिट्टी तुझे घेरे में ले ले, दोनों बातों का नतीजा तो एक ही निकलता है!

कॉमिक्स समाप्त, इंतजार शुरू! कलियुग का।